Q रामानुज के द्वारा शंकर के मायावाद का खण्डन करें?

Ans:- विशिष्टाद्वैतवाद के प्रणेता रामानुज हैं। वे परम तत्व का एक और विशेष प्रकार का मानते हैं, इसी कारण उनका मत विशिष्टाद्वैतवाद कहलाता है। उनके मत में ईश्वर की भक्ति अद्वैत है। दार्शनिक दृष्टि से रामानुज का महत्व सबसे अधिक इसलिए है, कि उन्होंने भक्ति-रस को दार्शनिक स्वरूप दिया है।

जैसा कि हम जानते हैं कि शंकराचार्य माया के सहारे जगत को सिद्ध करते हैं। शंकर के अनुसार केवल कारण (ब्रह्म) ही सत है। कार्य (जगत) तो मिथ्या या माया है। उनके अनुसार ईश्वर की बीज शक्ति का नाम माया है। माया के दो रूप हैं - अविद्या और मिथ्याज्ञान। इन्हें आवरण और विक्षेप शक्ति कहते हैं। आवरण का अर्थ है छिपा देना। ये देना यह शक्ति का अभावात्मक रूप है। इसकी वजह से वस्तु का यथार्थ स्वरूप छिप जाता है। विक्षेप शक्ति के द्वारा एक वस्तु दूसरे रूप में दिखाई पड़ने लगती है, जैसे अंधेरे में रस्सी को सांप समझना। अंधेरा रस्सी के वास्तविक रूप पर आवरण डाल देता है। विक्षेप शक्ति रस्सी के रूप को सांप के रूप में प्रस्तुत करता है। शंकर के अनुसार माया के आवरण शक्ति के द्वारा ही एक ब्रह्म अनेक प्रकार के रूप जगत में प्रतीत करता है, वास्तव में अनेकरूप जगत मिथ्या है, परमार्थ सत्य (ब्रह्म) के एकत्व का ज्ञान होने पर जगत्व का निषेध हो जाता है। इस प्रकार

माया की व्यवहारिक सत्ता है, पारमार्थिक नहीं। शंकर इसे अनिर्वचनीय कहते हैं। यह सत् (भाव) और असत (अभाव) दोनों है, व्यवहारिक दृष्टि से सत्य और पारमार्थिक दृष्टि से असत्य है, अतः अनिर्वचनीय है। यह अनादि है, परन्तु सान्त है।

रामानुज शंकर के माया सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार माया ईश्वर की शक्ति है, जिसके सहारे परमात्मा इस विचित्र जगत की सृष्टि करता है। सृष्टि करने वाला परमात्मा सत्य है। अतः उसकी सृष्टि (संसार) भी सत्य है। रामानुज के शंकर के मायावाद के विरुद्ध कई आपत्ति की हैं, वे इस प्रकार हैं:-

① अविद्या का आश्रय जीव नहीं हो सकता क्योंकि जीव अविद्या का कार्य है। कार्य कारण का आश्रय नहीं हो सकता, क्योंकि कार्य के कारण से पहले मानना तर्क की दृष्टि से गलत है। ब्रह्म ज्ञान और स्वप्रकाश है और अविद्या अज्ञान है अंधकार है। ज्ञान अज्ञान का आश्रय नहीं हो सकता, प्रकाश और अंधेरा एक साथ नहीं हो सकता। माया ही ब्रह्म को तिरोहित करती है अगर उसका आश्रय ब्रह्म है तो उसे तिरोहित करने का प्रश्न ही नहीं है, इस प्रकार माया का आश्रय न तो ब्रह्म है न जीव। जिसका आधार नहीं वह मान्य नहीं। अतः शंकर की माया को स्वीकार नहीं किया जा सकता। अतः शंकर का यह कहना कि संसार की सृष्टि का कारण माया है, गलत है।

② शंकर ने माया के कार्य का आवरण रूपी वर्णन

है। माया की वजह से ब्रह्म का शुद्ध स्वरूप ढ़क जाता है। यह कैसे संभव है ब्रह्म तो स्वयं प्रकाश है, और प्रकाश को कौन आवरणीत कर सकता है।

(3) माया का स्वरूप ही असंगत है। क्योंकि किसी भी विषय का स्वरूप सत होगा या असत। माया का स्वरूप न तो सत या न असत। माया का स्वरूप सत नहीं क्योंकि सत तो अद्वैत-वेदांत में केवल ब्रह्म ही है, ब्रह्म के अलावे सबकुछ असत है।

4. शंकराचार्य माया को अनिर्वचनीय माना है। अनिर्वचनीय वह है जो वचन से परे हो या वचन (शब्दों) द्वारा जिसका वर्णन न किया जासके। तर्कशास्त्र का नियम है कि किसी वस्तु की सत्ता भाव या अभाव दो ही रूपों में प्रकट किया जासकता है। भाव या अभाव के परे कोई वस्तु नहीं। माया अनिर्वचनीय वस्तु है अतः इसकी सत्ता नहीं है।

5. अविद्या अनिर्वचनीय है। इसका कोई प्रमाण भाव नहीं है। माया का प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान व्याप्ति या श्रुति से वर्णन नहीं किया जासकता। इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीनों से अनिर्वचनीय माया का वर्णन करना कठिन है। अतः माया की सत्ता का कोई प्रमाण नहीं है।

6. अविद्या का अंत संभव नहीं। शंकर के अनुसार विशुद्ध ज्ञान से ही अज्ञान का नाश होता, जैसे प्रकाश से अंधकार का। अज्ञान का नाश ज्ञान से नहीं हो सकता। ज्ञान तो सर्वथा निर्विशेष है

निर्विशेष ज्ञान नहीं होता।

7. शंकर के अनुसार, "ब्रह्म सत्यं" अर्थात केवल ब्रह्म ही सत्य है। उनके अनुसार निर्गुण ब्रह्म ज्ञान नहीं, ब्रह्मभाव है। सब कुछ ब्रह्म है यही ब्रह्मभाव है। यह विशुद्ध ज्ञान है। यही मोक्ष प्राप्ति का कारण है माया के अभाव में ही ब्रह्मभाव उपस्थित होगा। रामानुज का कहना है कि माया तो भावात्मक है किसी भाव पदार्थ का केवल ज्ञान से ही विनाश नहीं हो सकता। जीव का बंधन भावात्मक है कर्म जन्य है। इसका विनाश केवल ज्ञान से नहीं बल्कि कर्म, भक्ति और ज्ञान प्रसाद से हो सकता है। बंधन का नाश तभी होगा जब सभी कर्म क्षीण (कमजोर) हो जाय। जीव की भक्ति से परमात्मा प्रसन्न हो मुक्ति देते हैं। इस प्रकार रामानुज शंकर के अविद्या को मिथ्या रूप में स्वीकार नहीं करते।

—x—

Fauzia Perween
H.O.D Philosophy
Oriental College
Patna city

Scanned with CamScanner